Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252006

शिक्षा में फिल्मों की भूमिका

सूर्य प्रकाश राठौड़, डॉ संगीता माथुर

रिसर्च स्कॉलर कैरियर पॉइंट यूनिवर्सिटी. कोटा
एसोसिएट प्रोफेसर कैरियर प्वाइंट यूनिवर्सिटी, कोटा

सारांशिका : मानव प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है, जो अपने साथ कुछ जन्मजात शक्तियां लेकर पैदा होता है। शिक्षा के द्वारा मानव की इन जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

कई लोग मानते आए हैं कि फिल्में बच्चों को बिगाड़ने का काम अधिक करती हैं। लेकिन यही फिल्में अक्सर पढ़ने–पढ़ाने के माहौल में भी दखल देती हैं। फिल्मों में अध्यापक का चेहरा बदला है और कई सारी फिल्में भी 'गुरु' की भूमिका में आती है और सिनेमाघर को 'क्लास–रूम' का दर्जा देकर बहुत कुछ सिखा–पढ़ा जाती हैं।

हमारी फिल्मों में अध्यापक और शिक्षा की भूमिका को कभी भी अनदेखा नहीं किया गया है। शिक्षा के प्रसार–प्रचार में फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी उद्देश्य से देश में कई फिल्मों जैसे शशिकाईसाल, 'जागृति', 'परिचय', 'श्री 420', 'मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस, 'ब्लैक', 'स्वदेस', 'तारे जमीन पर', '3 ईडियट्स', 'चल चलें'(2009), 'पाठशाला' (2012), 'चाक एंड डस्टर' (2016), 'मैडम गीता रानी' आदि कई फिल्मों का निर्माण हुआ है। जिन्होंने शिक्षा की ज्योत जलाई है।

मानव प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है, जो अपने साथ कुछ जन्मजात शक्तियां लेकर पैदा होता है। शिक्षा के द्वारा मानव की इन जन्मजात शक्तियों का विकास,उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मानव के जन्म से ही उसके परिवार द्वारा अनौपचारिक रूप से तत्पश्चात विद्यालय भेजकर औपचारिक रूप से प्रारंभ कर दिया जाता है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ ना कुछ सिखाया जाता रहा है और सीखने सिखाने का यह क्रम जीवन भर चलता है। अतः हम कह सकते हैं कि वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने सिखाने की सब प्रयोजना प्रक्रिया ही शिक्षा है

प्रत्येक प्राणी जन्म के बाद सर्वप्रथम पहला पाठ मां की गोद में पड़ता तत्पश्चात अपने घरेलू वातावरण तथा आसपास के पर्यावरण से कुछ न कुछ सीखता रहता है। इस सीखने के अनुभव का परिणाम यह होता है कि वह धीरे–धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण से अपना सामंजस्य स्थापित करता है। इस प्रकार वस्तुतः सीखने सिखाने की यह प्रक्रिया जीवन प्रयत्न चलती रहती है। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252006

एक दौर था जब सिनेमा देखना सिर्फ मनोरंजन का माध्यम मात्र माना जाता था लेकिन आज ऐसा नहीं है, अब सिनेमा मनोरंजन से आगे बढ़कर हमारे बीच तार्किक बहसों को शुरू करने का जरिया भी बन रहा है। सिनेमा को लेकर अक्सर यह कहा जाता है कि यह हमारे समाज का दर्पण है क्योंकि सिनेमा में हम जो कुछ भी देखते हैं वह समाज का प्रतिरूप है और अलग–अलग रूपों में ही सही लेकिन इसका कथानक, चरित्र व घटनाएं हमारे समाज से ही प्रेरित हैं. इसी संदर्भ में जब हम दृश्यों के जरिये समाज की भिन्नताओं को देखते हैं, समझते हैं व उन पर बात करते हैं तो समाज को और अधिक बेहतर तरीके से समझ पाते हैं. साथ ही बातचीत का एक तर्कशील आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी बना पाते हैं।

कई लोग मानते आए हैं कि फिल्में बच्चों को बिगाड़ने का काम अधिक करती हैं। लेकिन यही फिल्में अक्सर पढ़ने–पढ़ाने के माहौल में भी दखल देती हैं। फिल्मों में अध्यापक का चेहरा बदला है और कई सारी फिल्में भी 'गुरु' की भूमिका में आती है और सिनेमाघर को 'क्लास–रूम' का दर्जा देकर बहुत कुछ सिखा–पढ़ा जाती हैं।

हमारी फिल्मों में अध्यापक और शिक्षा की भूमिका को कभी भी अनदेखा नहीं किया गया है। किन्तु हमारे देश में आज भी शिक्षा को लेकर बहुत कुछ करना बाकी है। बहुत कुछ होना बाकी है। जब तक हम शिक्षित समाज नहीं बनाएंगे, तब तक हमारी समझ विकसित नहीं होगी, हमारा संपूर्ण विकास नहीं होगा।

ग्रामीण लोग बच्चों को पढ़ाने की जगह काम कराते हैं, ताकि परिवार की आय बढ़े और परिवार का जीवन–यापन चलता रहे। लेकिल मुझे लगता है कि पढ़ाई हर इंसान का पहला अधिकार है और वह उसे मिलना चाहिए। हम बच्चों को शिक्षित किए बिना कुछ भी करलें उसकी कोई गिनती नहीं है।

शिक्षा के प्रसार–प्रचार में फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी उद्देश्य से देश में कई फिल्मों का निर्माण हुआ है। निम्न प्रकार से है :–

1. 'शिकाईसाल'

यह फिल्म असम के एक जिले की है, वहां की तिवी भाषा पर यह फिल्म बनाई गई है। इस फिल्म में एक शिक्षक का संघर्ष है। इसमें बतलाया गया है कि किसी व्यक्ति की मेहनत को, सरकारी तंत्र किस तरह से पंगु बना देता है। फिल्म में एक शिक्षक हैं जो अपनी मेहनत से गांव के बच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चों को एकत्रित कर स्कूल की शुरुआत करते है।स्कूल जब बच्चों से भरने लगता है तो सरकार उसे अपना लेती है।

किस तरह कई शिक्षक ग्रामीण परिवेश में कठिन परिस्थितियों के होते हुए भी शिक्षा की जोत को थामे हुए हैं। किंतु किसी व्यक्ति की मेहनत को, सरकारी तंत्र किस तरह से पंगु बना देता है। फिल्म में बतलाया गया है।

2. 'जागृति' (1954)

अभिभट्टाचार्य अभिनीत इस फिल्म के अध्यापक शेखर का मानना है कि असली पढ़ाई बंद कमरों की बजाय बाहर प्रकृति की गोद में बैठ कर ही हो सकती है।

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252006

वह अपने छात्रों को भारत–दर्शन के लिए ले जाता है और गाता है– 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिन्दुस्तान की, इस मिट्टी से तिलक करो यह धरती है बलिदान की.....'। इस फिल्म का ही असर था कि इसके बाद छात्र–छात्राओं को देशाटन के लिए ले जाए जाने की परंपरा को बल मिला

3. 'श्री 420' (1967)

फिल्म राज कपूर की में स्कूल टीचर विद्या (नरगिस) बच्चों को गाते हुए पढ़ाती है– 'तीतर के दो आगे तीतर, तीतर के दो पीछे तीतर, बोलो कितने तीतर...'। भले ही इस फिल्म की कहानी पढ़ाई–लिखाई के बारे में नहीं थी लेकिन यह गीत यह संदेश तो देता ही है कि बच्चों को इस रोचक तरीके से भी पढ़ाया जा सकता है।

4. 'परिचय' (1972)

इस फिल्म का नायक एक ऐसे अमीर घर के बच्चों को पढ़ाने के लिए आता है जिनके माता–पिता नहीं हैं और जो अपनत्व से महरूम भी है। वह न सिर्फ इन्हें पढ़ना सिखाता है बल्कि इनके भीतर संस्कारों का संचार भी करता है।

5. 'मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस.(2003)

इस फिल्म में मुख्यतः चिकित्सा–क्षेत्र में व्याप्त असंवेदनशीलता पर आधारित है

यह जता जाता है कि ज्ञान भले ही किताबों में बंद हो लेकिन किसी को भला–चंगा करने के लिए इन किताबी हदों से बाहर भी जाना चाहिए।

6. 'स्वदेस'(2004)

फिल्म 'स्वदेस' किताबी बातों को सहजता से समझने और उस ज्ञान को अपने लोगों के उत्थान के लिए उपयोग में लाने की सीख देती नजर आती है।

इसी प्रकार महात्मा गांधी के दर्शन, उनके विचारों और शिक्षाओं के बारे में जितना ज्ञान और जो सीख हजारों किताबें मिल कर नहीं दे पाईं, वह अकेली 'लगे रहो मुन्नाभाई' (2006) ने दे दिया।

7. 'ब्लैक' (2005)

संजय लीला भंसाली की इस फिल्म में एक ऐसा अध्यापक है जो अपनी गूंगी, बहरी और अंधी शिष्या को पढ़ा–लिखा कर सक्षम बनाता है। अंत में वही शिष्या बुजुर्ग और अक्षम हो चुके अपने गुरु को सहारा देती है।

8. 'तारे जमीन पर' (2007)

पढ़ाने–सिखाने वाली फिल्मों की धारा में प्रभावशाली बदलाव तो तब आया जब आमिर खान की फिल्म 'तारे जमीन पर' (2007) के बाद इस फिल्म में उठाए गए कई सवालों को काफी चर्चा मिली कि क्या सभी बच्चों को एक ही तरीके से पढ़ाया जाना उचित है? कहीं दूसरे बच्चों से होड़ के चक्कर में हम अपने बच्चों से उनका बचपन तो नहीं छीन रहे? इस फिल्म का असर भी हुआ और शिक्षा–क्षेत्र से जुड़े लोगों, शिक्षाविदों व अभिभावकों में चेतना भी जगी।

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252006

देश के कई राज्यों में अध्यापकों को यह फिल्म दिखाने के लिए ले जाया गया ताकि वे लोग बच्चों को पढ़ाने के प्रति अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाएं। देश के प्रत्येक स्कूल में विशेष प्रतिभा वाले बच्चों के लिए अलग से एक अध्यापक रखे जाने के सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश के पीछे भी इस फिल्म के आने के बाद समाज में आई चेतना को ही कारण माना जा सकता है।

9. '3 ईडियट्स' (2009)

यह फिल्म अपने तीन मुख्य नायकों के द्वारा यह संदेश देती दिखाई दी कि जीवन में सफलता पाने के लिए उस काम को करना अधिक सही है जिसमें आपका मन हो और जिसे आप बेहतर ढंग से कर सकें। यह फिल्म बताती है कि पढ़ने से ज्यादा गुढ़ना जरूरी है और कभी–कभी पढ़ने में 'ईडियट' लगने वाले लोग भी जीवन में दूसरों से अच्छा कर जाते हैं।

10. 'चल चलें'(2009)

इसमें छात्रों पर अकेडमिक प्रेशर को दिखाया गया है। फिल्म में मिथुन चक्रवर्ती मुख्य भूमिका में हैं। इस फिल्म में अभिभावक के शैक्षिक दवाब के चलते एक बच्चा आत्महत्या कर लेता है। इसके बाद इस बच्चे की आत्महत्या की खबर पूरे देश में फैल जाती है जो एजुकेशन सिस्टम और अभिभावक के जरूरत से ज्यादा दवाब की तस्वीर देश के सामने पेश करता है।

11. 'पाठशाला' (2012)

इस फिल्म में शाहिद कपूर एक डांस टीचर होता हैं जो स्कूल के प्रशासकीय तौर–तरीके, अध्यापकों के रवैये और बच्चों पर ज्यादा प्रेशर के खिलाफ जाकर सिस्टम को बदलने का प्रयास करते नजर आते हैं।

12. 'चाक एंड डस्टर' (2016)

शिक्षा के व्यापारीकरण पर बनी फिल्म है। इस फिल्म में बतलाया गया कि किस प्रकार शिक्षा प्रणाली को व्यापार बना दिया है और इस खेल में सरकार, कॉर्पोरेट, समाज, नेता और पेरेंट्स सभी शामिल हैं। यह साल 2016 की पहली महिला प्रधान फिल्म भी थी। यह फिल्म भारतीय प्राइवेट शिक्षा व्यवस्था के व्यवसायीकरण पर आधारित है। यह फिल्म अध्यापकों और छात्रों के बीच कम्यूनिकेशन और उन आपसी समस्याओं पर प्रभाव डालती हैं जो दिन प्रति–दिन बदलती और बढ़ती जा रही हैं।

13. 'मैडम गीता रानी' (2019)

सरकारी स्कूलों की हालत किसी से छिपी नहीं है। किसी स्कूल में शिक्षक नहीं हैं, तो किसी स्कूल में छात्र नहीं है। वहीं, कुछ ऐसे स्कूल भी हैं, जहां दोनों हैं, पर मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं। ऐसी हालत भारत के किसी एक राज्य के सरकारी स्कूलों की नहीं, बल्कि पूरे भारत में कमोबेश एक सी हालत है। बस 19–20 का फर्क हो सकता है।

मैडम गीता रानी फिल्म की कहानी सरकारी स्कूल को केंद्र में रखकर लिखी गई है, जहां शिक्षक हैं, छात्र हैं, लेकिन, स्कूल जैसी कोई बात नजर नहीं आती। इस सरकारी स्कूल की तकदीर उस समय खुलने लगती है, जब वहां एक नई प्रधानाध्यापिका गीता रानी की नियुक्ति होती है। जो

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252006

चुनौतियों से लड़ते हुए एक केवल नाम के स्कूल को राज्य के सबसे बेहतरीन स्कूलों की लाइन में लाकर खड़ा कर देती है।

निष्कर्ष :–

मानव प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है, जो अपने साथ कुछ जन्मजात शक्तियां लेकर पैदा होता है। शिक्षा के द्वारा मानव की इन जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

कई लोग मानते आए हैं कि फिल्में बच्चों को बिगाड़ने का काम अधिक करती हैं। लेकिन यही फिल्में अक्सर पढ़ने–पढ़ाने के माहौल में भी दखल देती हैं। फिल्मों में अध्यापक का चेहरा बदला है और कई सारी फिल्में भी 'गुरु' की भूमिका में आती है और सिनेमाघर को 'क्लास–रूम' का दर्जा देकर बहुत कुछ सिखा–पढ़ा जाती हैं।

शिक्षा के प्रसार–प्रचार में फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी उद्देश्य से देश में कई फिल्मों का निर्माण हुआ है। जो निम्न प्रकार से हैः– 'शिकाईसाल, 'जागृति', 'परिचय', 'श्री 420', 'मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस', 'ब्लैक', 'स्वदेस', 'तारे जमीन पर', '3 ईडियट्स', 'चल चलें'(2009), 'पाठशाला' (2012), 'चाक एंड डस्टर' (2016), 'मैडम गीता रानी' आदि कई फिल्मों का निर्माण हुआ है। जिन्होंने शिक्षा की ज्योत जलाई है।

संदर्भ :–

1. BED, समकालीन भारत एवं शिक्षक शिक्षा, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।

2. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (2009)

3. टीचर्स जर्नल्स

4. ओम प्रकाश – भारत में शिक्षा का मूल अधिकार, कल्याण पब्लिकेशन, जयपुर

5. योजना हिन्दी पत्रिका

6. भारत 2022 – वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार

7. https://www.amarujala.com

8. https://www.nibandh.com

9. https://www.samacharnama.com